



Hargharpanditji

॥ महाशिवरात्रि व्रत कथा ॥

ॐ नमः शिवाय

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ महाशिवरात्रि व्रत कथा ॥

प्राचीन समय की बात है। एक नगर में चित्रभानु नाम का एक शिकारी रहता था। वह शिकार करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। एक दिन उसके ऊपर बहुत ऋण हो गया। ऋण चुकाने के लिए उसे अपना घर छोड़ना पड़ा और वह जंगल में शिकार करने चला गया। संयोग से वह दिन महाशिवरात्रि का था। चित्रभानु पूरे दिन भूखा-प्यासा रहा, क्योंकि उसे कोई शिकार नहीं मिला। शाम होने पर वह जंगल में एक बेल वृक्ष पर चढ़कर बैठ गया और रातभर शिकार की प्रतीक्षा करने लगा। उस बेल वृक्ष के नीचे एक शिवलिंग स्थापित था, लेकिन चित्रभानु को इसकी जानकारी नहीं थी।

रात के प्रथम प्रहर में एक हिरणी वहां आई। चित्रभानु ने उसे देखकर धनुष पर बाण चढ़ाया। हिरणी ने विनती की कि वह अपने बच्चों को अंतिम बार देखकर वापस आएगी। चित्रभानु ने उसे जाने दिया। प्रतीक्षा करते समय उसके हाथ से कुछ बेलपत्र और जल की बूंदें शिवलिंग पर गिर गईं। इस प्रकार अनजाने में ही उसकी प्रथम प्रहर की शिव पूजा हो गई।

कुछ समय बाद हिरणी अपने वचन के अनुसार वापस आई। उसके साथ उसका परिवार भी था। चित्रभानु ने फिर बाण उठाया। हिरणी और उसके परिवार ने उससे अपने अंतिम कर्म पूरे करने का अवसर मांगा। चित्रभानु ने उन्हें जाने दिया। इस प्रकार रात के अलग-अलग प्रहरों में उसके हाथ से बेलपत्र और जल शिवलिंग पर गिरते रहे और उसकी अनजाने में ही चार प्रहर की शिव पूजा पूरी हो गई।

रातभर जागरण, उपवास और शिवलिंग पर बेलपत्र अर्पित करने के कारण चित्रभानु के सभी पाप नष्ट हो गए। भगवान शिव उससे प्रसन्न हुए और उसे दर्शन देकर आशीर्वाद प्रदान किया।
भगवान शिव की कृपा से चित्रभानु के जीवन में सुख-शांति आई और अंत में उसे मोक्ष की प्राप्ति हुई।

कथा का संदेश

यह कथा बताती है कि महाशिवरात्रि का व्रत, जागरण और भगवान शिव की भक्ति श्रद्धा एवं समर्पण का पर्व है। भगवान शिव भक्त के भाव को महत्व देते हैं। यह पर्व हमें हिंसा, क्रोध, लोभ और अहंकार का त्याग करके करुणा, संयम और सदाचार अपनाने की प्रेरणा देता है।

हर हर महादेव!

ॐ नमः शिवाय।

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"